दैनिक
राष्ट्रीय प्रस्तावना
गाँव से गवर्नेन्स तक

लखनऊ, रायबरेली, इलाहाबाद,आजमगढ़, झांसी, एटा,औरैया, अमेठी,बलरामपुर, फतेहपुर, बांदा, उन्नाव, लखीमपुर, मुरादाबाद, कन्नौज, बाराबंकी, सीतापुर,जौनपुर,श्रावस्ती,उरई,जालौन, फिरोजाबाद,हरदोई, मथुरा,कानपुर,ललितपुर, गोण्डा, सहारनपुर,सिद्धार्थनगर,सन्तकबीरनगर, नोयडा सहित प्रदेश के समस्त क्षेत्रों में बहुप्रसारित

कैलिफोर्निया में जंगलो की आग जलवायु - असंतुलन का कारण तो नही : एक बहस (भाग-03)

प्रो0 भरत राज सिंह

हम पूर्व अंक-2 (दो) मे अमरीकी डोनाल ट्रम्प के 22 नवम्बर 2018 ट्वीट पर बताया कि अमेरिका मे वर्तमान मे तापमान शून्य से दो डिग्रीसेंटीग्रेड कम चल रहा है और वैज्ञानिक कह रहे कि यहा ग्लोबल-वार्मिंग का प्रभाव है। वह 2017 मे भी वैश्विक-तापमान की बढोत्तरी को वैज्ञानिको की सोच की संज्ञा दी । आइये आगे पढिये अमेरिका के राष्ट्पति कैलिफोर्निया में जंगलो की आग के लिये किस पर ठीकरा फोड रहे है ।

कैलिफोर्निया में जंगलो की आग बन-कुप्रबंधन का परिणाम

ट्विटर पर, राष्ट्रपति ने दावा किया कि कैलिफोर्निया राज्य के जंगल की आग खराब वन-प्रबंधन का एक परिणाम है। इसकी सच्चाई अधिक जटिल है; चूंकि कैलिफ़ोर्निया के आदिवासी लोग राज्य के दोनों सिरों को छोड़ कर जंगल कें अन्दर की ओर भागकर चले गए है।

राष्ट्रपति ट्रम्प ने 10 नवम्बर 2018 सप्ताहांत में ट्विटर पर वन प्रबंधन पर अनुमान लगाते हुए, इस राज्य को संघीय भुगतान वापस लेने की धमकी दिया था । उनके इस बयान से अग्निशामकों नए नाराजगी जताई क्योकि कैलिफोर्निया के जंगल की आग के कारणों को बिना जाने व उसकी देखरेख के लिये जिम्मेदार स्थानीय नेताओं और विभागो की लापरवाही की छान-बीन किये आरोप लगाया गया था। यह सूचना भ्रामक है कि वन प्रबंधन इतना खराब है जिसपर श्री ट्रम्प सुझाव दे रहे हैं । कैलिफ़ोर्निया के वर्तमान वाइल्डफ़ायर ने कहा - वन प्रबंधन ने एक अहम भूमिका निभाई है, और यह जंगल की आग नहीं हैं। इसीक्रम मे, मैक्स मोरिट्ज़ जो कैलिफोर्निया बार सांता बारबरा के एक वन्यजीव विशेषज्ञ है ने भी कहा-यह आग जंगलों में भी नहीं लगी है, । बल्कि, यह वहा के कैंप और वूल्सी की आग है, जो उत्तरी और दक्षिणी कैलिफोर्निया के मध्य मे उन संवेदनशील क्षेत्रों मेंसे शुरू होतीं हैं, जिन्हें जंगली-शहरी इंटरफ़ेस के रूप में जाना जाता है- ऐसे स्थान जहां आदिवासी समुदाय अविकसित क्षेत्रों के करीब हैं, वहा के जंगलों या उसके पड़ोस से जंगलों में आग लगना आसान हो जाता है।

कैलिफोर्निया में इतने सारे घर जंगल क्यों हैं?

यूनाइटेड स्टेट्स डिपार्टमेंट ऑफ़ एग्रीकल्चर की 2015 की एक रिपोर्ट में यह पाया गया कि 2000 से 2010 के बीच (आखिरी साल तक जिसके लिए डेटा उपलब्ध था), वाइल्डलैंड-शहरी इंटरफ़ेस में जाने वाले लोगों की संख्या में 5 प्रतिशत की वृद्धि हुई थी। रिपोर्ट के अनुसार, देश के हर तीन घरों में से एक घर के बराबर 44 मिलियन घर, वनों के दायरे में आने वाले शहरी इंटरफ़ेस में हैं। सबसे अधिक ऐसी आवादी का घनत्व; फ्लोरिडा, टेक्सास और हां, कैलिफोर्निया में हैं।

यह भी सच है कि कैलिफ़ोर्निया के जंगल बड़े हो रहे हैं तथा राज्य के अधिकांश बड़े जंगल इस सदी में हुए हैं। मेंडोसिनो वहुयामी आग (Mendocino Comple& Fire), इस वर्ष की शुरुआत में, रिकॉर्ड के अनुसार कैलिफ़ोर्निया की सबसे बड़ी आग थी, जिसने कई एकड़ जलाकर भस्म कर दिया, ऐसा मापा गया था। कैंप फायर राज्य के इतिहास में पहले से ही सबसे विनाशकारी है, जिसमें 6,000 से अधिक घर जलकर स्वाहा हो गये हैं। अब आग का दायरा ही सिर्फ बड़ा नहीं हो रहा है; वे और भी अप्रत्याशित होते नजर आ रहे हैं। वे अक्सर रात के मध्य से अधिक गर्मी से जल रहे हैं (जब कि वे रात मे ठंडे हो जाते थे), अब पहाड़ियों की ओर तेजी सें दौड़ रहे हैं और अपने पड़ोस के जंगलो की ओर भी बढ रहे है; जो अपेक्षाकृत सुरक्षित थे।

शोधकर्ता व वैज्ञानिकों का विचार

शोधकर्ता व वैज्ञानिकों का मानना है कि इसका मुख्य कारण जलवायु परिवर्तन में प्रभावी बढ़ोत्तरी को जिम्मेदार ठहराया जा सकता हैं, क्योंकि वैश्विक तापमान (गुलोबल-वार्मिंग) में बढ़ोत्तरी के कारण वनस्पति तेजी से सूख जाती है और अधिक आसानी से जल जाती है और इसका असर सबसे अधिक ÷घातक और महंगा÷ स्वरूप वाइल्डलैंड व शहरी इंटरफ़ेस में पाया जा रहा हैं, जो अधिक से अधिक घरों, कस्बों और जीवन को आग के हवाले होने से नुकसान पहुंचाती हैं। कैंप फायर पहले ही राज्य के अभी तक के इतिहास में सबसे घातक आग की परिभाषा मे आ चुका है, कम से कम 29 लोगों की मौत 10 नवम्बर 2018 तक हो गई है, और आगे मरने वालों की संख्या बढ़ सकती है।

डॉ0 मोरित्ज़ ने कहा - हमारे पास पहले से ही सम्वेदनशील हाउसिंग का लेखा-जोखा (स्टॉक) है। इन भवनो की संरचना जब हुई थी, वह पूर्व के दशकों मे भवन निर्माण कोड के अनुसार तैयार की गई थीं और वे आग प्रतिरोधी नहीं थीं जितनी अब

उन्हे होना चाहियें । हमने अपने घरों को कहाँ और कैसे बनाया है, इस मुद्दे ने इन जैसी घातक घटनाओं द्वारा जो घरो व जानमाल के नुकसान से हुई है, हमारे कर्तब्य के प्रति हुई उदासीनता से अवगत कराया है।

कैलिफ़ोर्निया के अधिकांश जंगलों का संयुक्त परिदृश्य

राज्य की 33 मिलियन एकड़ वन, संघीय एजेंसियां, जिनमें वन सेवा और आंतरिक विभाग शामिल हैं, जो 57 (सत्तावन) प्रतिशत के मालिक हैं और उनका प्रबंधन करते हैं। 40 (चालीस) प्रतिशत परिवारों का स्वामित्व है, जो मूल अमेरिकी जनजातियों या कंपनियों, औद्योगिक लकड़ी कंपनियों सहित; केवल 3 प्रतिशत राज्य और स्थानीय एजेंसियों के स्वामित्व और प्रबंधित हैं। यहा यह विचार्णीय हैं कि राष्टपति डोनाल्ड ट्रम्प ने अपने ट्वीटेर पर यह निर्दिष्ट नहीं किया कि कौन से संघीय भुगतान, वन-प्रबंधन खराब होने से रोक दिए जा सकते हैं। लेकिन कैलिफोर्निया ने खुद ही इस साल .256 मिलियन का आवंटन किया, जो कि जंगल की घातक आग के खतरे को कम करने के उपयोग म? है। हाल के वर्षो में वन सेवा ने मृत वनस्पतियों से छुटकारा पाने के लिए अपने निर्धारित वन-प्रबंधन प्रथाओं को और अधिक ÷निर्धारित÷ या ÷नियंत्रित÷ करने की कोशिश की है, जो भविष्य के जंगल में आग लगा सकती है। लेकिन इसका बजट अग्निशमन लागत से अधिक रखा गया है। कांग्रेस ने इस साल एक बजट पारित किया, जिसमें से कुछ समस्याओं को ठीक करने के लिए (और एक समर्पित अग्निशमन निधि बनाने के लिए) तैयार किया गया था, लेकिन यह अगले साल तक प्रभावी नहीं होगा। उपरोक्त बहस से यह प्रश्न उठता है कि क्या विश्व के वैज्ञानिक जो अपने आकडो से अथवा अनुभव से तथ्य प्रकाश मे लाते है उसे व्यापारिक दृष्टिकोण से ही आँका जाना चाहिये अथवा वैश्विक जीव-जंतुओ के विनष्ट होने खतरे से बचाने मे विकसित देशो की सहभागिता सबसे आगे होनी चाहिये । आज की चर्चा से यह भी निष्कर्ष निकलता है कि यदि दुनिया की मनुस्यो व अन्य जीवो की प्रजाँतिया विलुप्त हो जायेंगी तो विकास की गति अपने आप ही रुक जायेगी । आज के जलवायु असंतुलन व वैश्विक-तापमान की विभीषिकाओ को अधिक महत्व देने पर सभी सामाजिक कार्यकर्ताओं, राजनैतिज्ञो, वैज्ञानिकों व प्रबुद्धवर्ग को धरती को बचाने व जीव-जंतुओ के सरक्षण पर आगे आकर कार्य करना होगा । आज हम विकसित अथवा विकासील देश अपने-अपने देशो को अधिक धनाढ्य बनाने व सुख-सुविधाओ को बढ़ाने की होड़ मे लगे हुये है वह मात्र कुछ शिर-फिरो के कारण परुमाणु अस्त्रों के तवाही से भले अपने को उबार सके-चाहे वह उत्तरी कोरिया हो या सीरि?या आदि। परन्तु जलवायु परिवर्तन व वैश्विक तापमान की देश की सीमाओं मे नही बाँधा जा सकता है । अतः हमे सभी देशो नरेंद्र मोदी जैसे कार्बन को घटाने जैसे महत्वपूर्ण निर्णय का स्वागतकर सह्भागिता बढाने की जरूररत है । क्या हम सभी प्रबुद्धवर्ग अपने देश की सीमाओ को तोडकर विश्ववंधुत्व की भावना से प्रेरित हॉकर जलवायु असंतुलन की विभीषिकाओ से बचाने मे अग्रसर होगे ?